No. of Printed Pages : 11

एम.टी.टी.-003

0295

POST GRADUATE CERTIFICATE IN BANGLA HINDI TRANSLATION PROGRAMME (PGCBHT)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2018

एम.टी.टी.-003 : बांग्ला-हिन्दी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. विज्ञापन का संक्षिप्त इतिहास बताते हुए उसकी प्रकृति पर प्रकाश डालिए। 20

अथवा

विज्ञापन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताइए कि विज्ञापन कितने प्रकार के होते हैं?

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : 5

অনুশীর্ষ, অস্বস্তি, পানাহার, যথেচ্ছাচার, বোঝাই, লেপা-পোঁছা, পরিহিত, দ্রাবক, দেহপাত, জেদা-জেদি।

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखिए : 5

लड़खड़ाना, लड़का, भाभी, देखभाल, गटागट, फटकारना, इर्दगिर्द, दीवार, सिलसिला, सही।

4. नीचे दिए गए हिंदी मुहावरों के अर्थ स्पष्ट करते हुए उनके बांग्ला समतुल्य बताइए और हिंदी एवं बांग्ला में उनके प्रयोग कीजिए : 20

टोपी उछालना	सबक सिखाना
कान भरना	कान खड़े होना
कीचड़ उछालना	तीर निशाने पर लगना
अंटशंट बोलना	न सूत न कपास
जमीन सुँघाना	पाँव की जूती समझना

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं तीन** का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

3x10=30

(a) কী প্রখর রুদ্র। উহু-হুহু। এক-একবার নিশ্বাস ফেলিতেছি আর তপ্ত ধুলা সুনীল আকাশ ধূসর করিয়া উড়িয়া যাইতেছে। ধনী দরিদ্র, সুখী দুঃখী, জরা যৌবন, হাসি কান্না, জন্ম মৃত্যু সমস্তই আমার উপর দিয়া একই নিশ্বাসে ধূলির স্রোতের মতো উড়িয়া চলিয়াছে। এইজন্য পথের হাসিও নাই, কান্নাও নাই। গৃহই অতীতের জন্য শোক করে, বর্তমানের জন্য ভাবে, ভবিষ্যতের আশা-পথ চাহিয়া থাকে। কিন্তু পথ প্রতি বর্তমান নিমেশের শতসহস্র নূতন অভ্যাগতকে লইয়াই ব্যস্ত। এমন স্থানে নিজের পদগৌরবের প্রতি বিশ্বাস করিয়া অত্যন্ত সদর্পে পদক্ষেপ করিয়া কে নিজেকে চির-চিহ্ন রাখিয়া

যাইতে প্রয়াস পাইতেছে। এখানকার বাতাসে যে দীর্ঘশ্বাস ফেলিয়া যাইতেছে, তুমি চলিয়া গেলে কি তাহারা তোমার পশ্চাতে পড়িয়া তোমার জন্য বিলাপ করিতে থাকিবে, নূতন অতিথিদের চক্ষে অশ্রু আকর্ষণ করিয়া জানিবে ? বাতাসের উপরে বাতাস কি স্থায়ী হয়। না না, বৃথা চেষ্টা। আমি কিছুই পড়িয়া থাকিতে দিই না, হাসিও না, কান্নাও না। আমিই কেবল পড়িয়া আছি।

(b) কৃষিজ পণ্যের বাণিজ্যের আলোচনায় আমরা এই ঘটনার ওপর জোর দিয়েছি যে, যদিও গ্রামগুলি শহরের উৎপন্নের ওপর নির্ভর করত না, শহরগুলি কিন্তু গ্রামের উৎপন্নের একটা বিরাট অংশ গ্রহণ করত। অত্যন্ত চড়া ভূমিরাজস্ব দাবি করা হতো বলেই এমন সম্ভব হয়েছিল। খাদ্য ও কাঁচামাল কেনার জন্য যে টাকা গ্রামাঞ্চলে থেকে যেত, ভূমিরাজস্ব তা আবার ফিরিয়ে আনত শহরে। অথবা যখন রাজস্ব আদায় হতো উৎপন্ন দ্রব্যে (টাকায় নয়), তখন শহরের প্রয়োজনীয় যোগানই গাড়িবোঝাই হয়ে চলে আসত। শহরের তৈরি জিনিসের কোন বাজার গ্রামে ছিল না। তাই, যখন

কৃষিমূল্য বাড়তির দিকে যেত, তখন শহরের উৎপন্ন জিনিসের দাম বাড়িয়ে ফের ভারসাম্য বজায় রাখা যেত না। শুধুমাত্র ভূমিরাজস্ব সংগ্রহ বাড়িয়ে দিয়েই ভারসাম্য আনা যেত। ষষ্ঠ অধ্যায়ের প্রথম অংশ এবং নবম অধ্যায়ের দ্বিতীয় অংশে আমরা দেখব, কেমন করে ভূমি রাজস্বের বাস্তব বৃদ্ধি ঘটত। কৃষকের উদ্বৃত্ত উৎপন্নের বৃহত্তর অংশই চলে যেত ভূমিরাজস্বে। সুতরাং দাম বাড়ায় চাষী যে সম্ভাব্য সুবিধাগুলি পেতে পারত, বাড়তি ভূমিরাজস্ব তা নির্মূল করে দিত।

(c) দুই-তিন দিন নিরুপদ্রবে কাটিয়া গেল, উপরতলা হইতে সাহেবের অত্যাচার আর যখন নব-নবরূপে প্রকাশিত হইল না, তখন অপূর্ব বুঝিল ক্রিশ্চান মেয়েটা সেদিনের কথা তাহার পিতাকে জানায় নাই এবং তাহার সেই ফলমূল দিতে আসার ঘটনার সঙ্গে মিলাইয়া এই না-বলার ব্যাপারটা শুধু সম্ভব নয়, সত্য বলিয়াই মনে হইল। অনেক প্রকার কালো ফরসা সাহেবের দল উপরে যায় আসে, মেয়েটির সহিতও বার-দুই সিড়ির পথে সাক্ষাত হইয়াছে, সে মুখ ফিরাইয়া নামিয়া যায়, কিন্তু সেই দুঃশাসন

গৃহকর্তার সহিত একদিনও মুখোমুখি ঘটে নাই। কেবল, সে যে ঘরে আছে সেটা বুঝা যায় তাহার ভারী বুটের শব্দে। সেদিন সকালে ছোটবাবুকে ভাত বাড়িয়া দিয়া তেওয়ারী হাসিমুখে কহিল, সাহেব দেখছি নালিশ-ফরিদ আর কিছু করলে না।

অপূর্ব কহিল, না। যতটা গর্জায় ততটা বর্ষায় না।

তেওয়ারী বলিল, আমাদেরও কিন্তু বেশী দিন এ বাসায় থাকা চলবে না। ব্যাটা মাতাল হলেই আবার কোন দিন ফ্যাসাদ বাধাবে।

অপূর্ব কহিল, নাঃ ---- সে ভয় বড় নেই।

(d) শ্রদ্ধেয় শ্রী অনিল বিশ্বাস --- যাঁকে ভালোবেসে আমরা 'সবাই' অনিলদা বলি, আমাকে তাঁর গজল সংকলনের ভূমিকা লিখতে বলেন। কিন্তু সংকলন পড়ে মনে হলো যে, এর ভূমিকা লেখা খুব সহজ নয়। লিখতে পেলে উনি যা লিখেছেন তারই পুনরাবৃত্তি করতে হয়। তা ছাড়া আমি লেখক নই। আমাকে বলার উদ্দেশ্য আমি বাংলা ও উর্দূ দুটি ভাষাই জানি সাধারণভাবে এবং গজলকে ভালোবাসি

অসাধারণভাবে। তাই সংকলন পড়ে যে কটি বিশেষ বিষয় আমার চোখে পড়েছে ---- পাঠক পাঠিকাদের চোখে তা-ই তুলে ধরতে চাই।

প্রথমত এ বিষয়ে এ ধরনের বই, যতদূর জানি ---- অন্য কোনো ভাষাতেই লেখা হয়নি, উর্দূতেও নয়।

উর্দূতে ভিন্ন কবিদের গজল সংকলন পাওয়া যায় যাতে গজলে সংগীতের দিকটি সম্পূর্ণভাবে অবহেলিত হয়েছে। অনিলদার গজলে রয়েছে একাধারে 'আদবী' বা সাহিত্যিক গজল আর তার সঙ্গে গেয় গজলের চয়ন-কুশলতা, যাকে 'লিরিকাল' গজল বলা যায়। এই প্রথম গজলের সংগীতাঙ্গিক : যতি, বিরাম-সংকেত প্রভৃতি অত্যাবশ্যক বিষয়গুলি সাবলীলভাবে বলা হয়েছে সংকলনের পরিচিতিতে, যার অভাবে ---- বা যা না বুঝে গাইলে গজল হতে পারে অর্থহীন, অঙ্গহীন। আর দুঃখের বিষয় এই যে, এই যতি ও বিরাম দোষ দেখা যায় প্রায় সব গজল গাইয়েদের গীতভঙ্গীতে।

(e) বিশ্বকাপের জন্য ভারতীয় ক্রিকেট দলে যে তেমন কোনও পরিবর্তন আসবে না তার পূর্বাভাস ছিলই।

এদিন তাই সত্যি হল। মাইল গেল পূর্বাভাস। তবে দলে কয়েকটা নতুন মুখ এসেছে, যাদের মধ্যে অনেকেই হয়তো বিশ্বকাপে অভিষিক্ত হবে। শুক্রবার নয়াদিল্লিতে নির্বাচন কমিটির বৈঠক হয়। এরপরই এদিন বিশ্বকাপ ও এশিয়া কাপের জন্য ১৫ জনের দল ঘোষণা হয়। এদিন সন্দীপ পাটিলের নেতৃত্বাধীন নির্বাচন কমিটি যে ১৫ জনের ভারতীয় দল ঘোষণা করেন তাতে-- সামি, যুবরাজ, হরভজন নেহেরার ফিরে আসার পাশাপাশি নতুন মুখ নেগি বুমরা,পাণ্ডিয়ারা। তবে দলে নেই ইশান্ত, ভুবনেশ্বর, উমেশ যাদবের মতো ভরসামান খেলোয়াড়রা। দলে নেই সদ্য অসি সিরিজে ভালো পারফর্ম করা মনীষ পাণ্ডে। তবে চোটের কারণে বাইরে থাকা সামিকে দলে নেওয়ার প্রশ্ন তুলেছেন অনেকেই। উল্লেখ্য, আসন্ন ২৪ ফেব্রুয়ারি থেকে ৬ মার্চ পর্যন্ত এশিয়া কাপ শুরু। এদিন মিরপুরে বাংলাদেশের বিরুদ্ধে মিরপুরে উদ্বোধনী ম্যাচ খেলতে নামবে ভারত। বিশেষ করে ভারতের মাটিতেই শুরু হচ্ছে টি-২০ বিশ্বকাপ। ৮ মার্চ থেকে বিশ্বকাপের খেলা শুরু হলেও ভারতের খেলা ১৫ মার্চ নাগপুরে নিউজিল্যান্ডের বিরুদ্ধে।

6. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** का बांग्ला में अनुवाद कीजिए :

2x10=20

(a) भारत एक लोकतान्त्रिक देश है। लोकतंत्र में जनमत के आधार पर नीतियाँ तय की जाती हैं। जो लोग जनप्रतिनिधित्व के इच्छुक होते हैं वह जनता के पास जाते हैं और जनकल्याण हेतु अपना एजेंडा उनके सम्मुख रखते हैं। जिसका एजेंडा जनता को सही लगता है जनता उसे अपना प्रतिनिधि चुन लेती है। जाहिर है इस व्यवस्था में जनता और जनप्रतिनिधि में व्यापक संवाद होता है। अब सवाल यह उठता है कि संवाद का माध्यम क्या है? जनभाषा या किसी ऐसे देश की भाषा जिसे जनता समझती ही न हो। अगर सत्ता की भाषा कुछ और है तो इसका मतलब लोकतंत्र है ही नहीं। फिर कौन सा तंत्र हिन्दुस्तान को चला रहा है जहाँ जनभाषा में संवाद ही नहीं होता। कुछ लोग यह प्रश्न कर सकते हैं कि जनभाषा के क्या मायने हैं? इसका उत्तर बिलकुल सरल है। एक ऐसी भाषा जिसे कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और अटक से कटक के लोग समझते हों। फिर से यह पूछा जाएगा कि लगभग डेढ़ सौ भाषाओं और साढ़े पाँच सौ बोलियाँ जिस देश में प्रचलित हो वहाँ कोई एक भाषा क्या हो जिसे लोग समझें?

(b) विनोबा, इसी कारण, अर्थ की निश्चितता को उत्तम साहित्य का गुण नहीं मानते। वह, उत्तर-आधुनिक साहित्य-चिंतकों की ही तरह, सर्जनात्मकता को अर्थ की निरंकुशता से मुक्त करना चाहते हैं। कथा के तात्पर्य की निश्चितता को वह, इसीलिए, अस्वीकार कर देते हैं। *गीता* और *रामायण* को वह उत्तम साहित्य इसीलिए मानते हैं कि उनके तात्पर्य के विषय में अनिश्चितता और तत्प्रसूत मतभेद हैं और उनकी विविध तथा कई बार परस्पर-विरोधी व्याख्याएँ होती रही हैं। विनोबा तो यहाँ तक कह देते हैं कि 'जिस साहित्य के तात्पर्य के विषय में मतभेद न हो और तात्पर्य निश्चित कहा जा सके, उसमें साहित्य-शक्ति कम प्रकट होती है।' *ज्ञानेश्वरी* और *अमृतानुभव* की तुलना करते हुए वह कहते हैं : '*ज्ञानेश्वरी* में दिखता है, *अमृतानुभव* में है, पर दिखता नहीं। न दिखना, यह बहुत ही बड़ा होना होता है। दिखने में जो होता है, प्रकट होता है, उससे न दिखने में जो होता है, वह बहुत बड़ा होता है। साहित्य दिखता नहीं। उसका जितना सूक्ष्म चिंतन करेंगे, वह हमें व्यापक दर्शन देगा।'

(c) बस लेट भले हो, पर तेज़ रफ्तार से आगे बढ़ी जा रही थी। लम्बे सफर में यात्री एक-दूसरे से परिचय प्राप्त करने में देर नहीं करते, क्योंकि आपसी बातचीत से सफर जल्दी निपटने का अहसास रहता है और वह उबाऊ भी नहीं होता। ऐसी बातचीत में विषय तुका-बेतुका या साधारणतया बेमतलब समझा जानेवाला भी चलता है। यदि इनमें से कुछ प्रत्यक्ष रूप से घटित होते दिखे तो उसका आनंद पूरी तौर से उठाया जाना निश्चित है। ऐसे अवसर हमेशा आनंदप्रद न सही, पर पूरी तरह बेमजा हों, ऐसा भी नहीं होता।

शान्त हुए वातावरण में शुक्लजी हाथ की किताब पर ध्यान देते दिखे, पर कुछ ही देर बाद पिछली सीट से किसी स्त्री की गुस्से से भरी आवाज़ सुनने में आई, "शरम-हया सब बेच खाई है क्या? बेशर्मी से गुटरगूँ के लिए बस ही मिली?"

(d) मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम्हारी दिलचस्पी भारत में है। यह बहुत बड़ा देश है। विदेशियों को यहाँ सँपेरों के खेल, भालुओं व बंदरों के नाच तथा गाँवों के दूसरे पुराने खेल-तमाशे देखने में बहुत मज़ा आता है। लेकिन विभिन्न क्षेत्रों में जो विकास आज हो रहा है, हम उसे

देखकर ही अधिक प्रसन्न होते हैं। जलवायु, परिधान एवं रीति-रिवाजों में यहाँ भारी विविधता है।

मेरी कामना है कि तुम अपनी स्कूल परियोजना में सफलता प्राप्त करो। एक-दूसरे को जानकर ही समझ बढ़ सकती है और हम दोस्त बन सकते हैं। अनेक अमरीकी भारत भ्रमण के लिए आते हैं। हम उन सबका स्वागत करते हैं। तुम्हारे लिए और तुम्हारी कक्षा के लिए ढेरों शुभकामनाएँ।